संगीत माहितीस राष्ट्रीय प्रकाशनता

SCHOLARS

IMPACT

Quarterly

International Multidisciplinary Multilingual Journal of Contemporary Research

Vol. 6 | Special Issue 1 | March 2019

ISSN 2394 - 7632
EISSN 2394 - 7640

Special Issue

UGC Approved Journal No- 41129

IMPACT FACTOR - 5.98

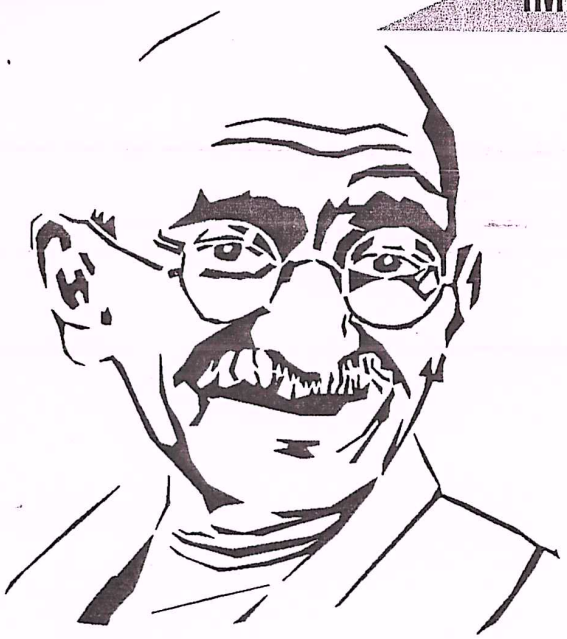

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

Special Issue on

IN THE CHANGING TIMES

(Book 3)

देवगिरी महाविद्यालय, औरंगाबाद

EDITOR IN CHIEF

DR. M. RAGHIB DESHMUKH

MAHATMA GANDHI EDUCATION & WELFARE SOCIETY

Govt. College of Arts & Science ★ Aurangabad ★

Issue Editors

Dr. Vishala Sharma
Dr. Datta Ermule
Dr. Nandkumar Kumbharikar

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

12.

संगीत के माध्यम से राष्ट्रीय एकात्मता

डॉ.वैशाली देशमुख
विभाग प्रमुख
संगीत विभाग , शासकिय ज्ञान विज्ञान महाविद्यालय,औरंगाबाद.

संगीत यह एकमात्र ऐसी कला है जिसमें एक चमत्कारीक और आध्यात्मिक शक्ति है जिसके माध्यम से संसार के सभी चराचरों, प्राणीयों को प्रभावित करता है । प्रकृति में नवजीवन लाकर प्रकृति की स्थिती को बदलने की शक्ति संगीत में है । इसि विचार को आगे बढाते हुए ऐसा विचार करना उचित रहेगा की चराचरों पर संगीत असरदार है तो मनुष्य प्राणीपर संगीत का प्रभाव होना कितना सहजतापूर्व है ।

संपूर्ण जगत में भारत एक ऐसा राष्ट्र है जहाँपर हर १००-५० मील के बाद लोंगों की बोली, रहन-सहन और परंपराये बदल जाता है । कींतू एकमात्र संगीत ही ऐसी कला है जो वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश देते हुए सभी भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशोंको संगठीत करती है । संगीत की सुरीली स्वर लहरीयों का जादू मनुष्यप्राणी के भाषाभेद को, शैलीगत मतभेदों को जातिअंतर्गत असमानताओंको , सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक भेदों को दुर कर एक दुसरों को मिलानेमे बहुत बडा योगदान देती है ।

संगीत एक मन की भाषा है जो हर प्राणीमात्रा के आत्मा तक सफर करती है । और संपूर्ण जगत का एक दुसरे से अच्छा व्यवहार का संदेश देती है । मनुष्य के हृदय मे सोए हुए भाबों को जगनि में संगीत जितना सक्षम है उतनी और कोई विद्या नही है । जो कुछ चित्र से नही कहा जा सकता, वह काव्य या भाषा से कह दिया जाता है और जिन भावों को व्यक्त करने में भाषा भी असमर्थ हो जाती है उन भावों को संगीत के ज़रिए आसानीसे समझा जा सकता है ।

भारतवर्ष के सभी प्रांतो को एकसंघ के रूप में बांधने का काम संगीत कला करती है । कश्मीर से कन्याकुमारी तक का सफर करने के बाद, यह पता चलता है की, सभी प्रांतोमे भाषा, परंपराये, सामाजिक व्यवहार अलग-अलग है लेकीन सभी प्रांतो की सांस्कृतिक धरोहर संगीत से जुडी है । और यही संगीत भारतवर्ष की राष्ट्रीय एकात्मता का प्रतीक है ।

भारत की प्राचीन संस्कृति का इतिहास अत्यंत गौरवशाली है । ऋग्वेद में ऐसा लिखा है की कोई भी संस्कृति विश्वकल्याण के लिये होती है । संस्कृतिको सुरक्षित रखने में कलाओं का बहुत बडा योगदान रहा है । संस्कृति समाज का दर्पण होती है । और यही कारण है की संस्कृति की एकरूपता, धार्मिकता, सामाजिक मान्यताऐं कलाओं मे विदयमान रही है । सर्व कलाओं मे संगीत कला एकमात्र कला है जो संस्कृतिकी धरोहर सुविकसित करती आ रही है ।

संगीत में भेदभाव से ऊपर उठकर काम करने की अदभुत शक्ती है । यही कारण है की सच्चा कलाकार न तो जाति - पाति के भेदभाव को मानता है और न उच - निच , गरीबी - अमिरी को मानता है । कलाकार का सबसे बडा धर्म और जाति उसकी कला है । और वह कला एक विशिष्ट शक्ती को समर्पित होती है ।

भारतवर्ष की संस्कृतिको अनेक आक्रमणों को झेलकर अपने भिन्नताओं को कायम रहने का महत्त्वपूर्ण काम करना पडा है । आर्यो से लेकर अंग्रेजो और मुस्लिम आक्रमणों से हमारी संस्कृतिपर असर पडा है । और यही कारणोंसे संगीत भी आक्रमणोंके अंतर्गत विकसित हुआ दिखाई देता है । भारतवर्ष की अखंडता, एकता, विविधता मे एकसंघता को कायम रखने का काम संगीत कला ने बखुबी निभाया दुआ दिखाई देता है । भारतवर्ष की संस्कृति का मुलग्रंथ वेद माना जाता है । इस मुलग्रंथ में भी रूद्र विणा, सरस्वती वीणा, लक्ष्मी ताल, ब्रम्ह ताल, आदि देव - देवताओंके नामो पर आधारीत वाद्यो का वर्णन मिलता है । संगीत और वेदों का गहरा संबंध स्पष्ट होते हुए यह दिखाई देता है की वैदिक काल में संगीतकला सभी स्तर के लोगों को संगठीत करने का काम करती रही है । भारत की संस्कृति में मुस्लिम - संस्कृति आने से उर्दु, अरबी, तुर्की, फारसी शब्दों का धुनों का भी समावेश हुआ है । और यही कारण है की मुसलमान कलाकार राम, कृष्ण, शंकर और काली तथा दुर्गा आदि की स्तुति अपने गायनकला सें करते है और हिंदू कलाकार हजरत मोहम्मद, ख्वाजा मुईनुद्दीन, शेख सलीम चिश्ती और निजामउद्दीन औलिया के गुणों का बखान करते सुनाई देते है ।

भारत के महान कलाकार तानसेन के गुरू स्वामी हरीदस थे । सरोद वादक उ.अल्लाउद्दीन खाँ की आराध्य देवी मैहर की शारदा माँ थी । उन्होंने अपनी बेटी नाम अन्नपूर्णा रखा है । शहनाई वादक उ.बिस्मील्ला खाँ ने संगीत साधना काशी कें मंदिरों में की है । उ.अमजद अली खाँ स्वसृजित राग का नाम गणेश कल्याण रखते है । संगीत ही एक ऐसी कला है जहा जात, धर्म , उच, नीच दुर होकर राष्ट्रीय एकात्मता का काम करती है ।

राष्ट्रीय एकात्मता का अर्थ अनेकता में एकता है । राष्ट्रपीता महात्मा गांधीजी ने राष्ट्रीय एकात्मता भाव संपूर्ण भारतवर्ष में प्रसारीत किया । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ये संगीत के बडे पारखी थे । उन्होने राष्ट्रीय एकात्मता की जगजागृती के लिये संगीत

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

कला के माध्यम का सहजतापूर्वक उपयोग किया । वैष्णव जन तो तेणे कहीजेये यह भजन महात्मा गांधीजी के अपने जीवन में बहुत प्ररीत करता था । इस भजन से उनका जीवन प्रभावित था । आज भी यह भजन हम सुनते है तब महात्मा गांधी का स्मरण जरूर होता है । यह भजन गुजरात के आध्यत्मिक कवी नरसिंह मेहताने लिखा है । पंद्रहवी शताब्दी में लिखा हुआ यह भजन कई सदियों से हमे प्ररित करता आ रहा है ।

इस भजन का अर्थ समझने के बाद यह पता चलता है की महात्मा गांधीजीने जीवन व्यतित करने का यही एक मार्ग पया था । इस भजन का अर्थ हमे यह सीख देता है की 'वैष्णव जन तो तेने कहि जे पीडपराई जाणेरे' (सच्चा वैष्णव वही है , जो दुसरों की पीडा को समझाता हो) 'पर दु:खे उपकार करे तो ये , मन अभिमान ना आणे रे ' (दुसरे के दु:ख पर जब वह उपकार कर , तो अपने मन में कोई अभिमान ना आने दे) 'वाच काछ मन निच्छल राखे, धन धन जननी तेनी रे ।(जो अपनी वाणी, कर्म बडे निश्छल रखे, उसकी धरती माँ धन्य धन्य है) समदृष्टी ने तृष्णा त्यागी परस्त्री जेने मात रे (जो सबको समान दृष्टी से देखे, सांसारीक तृष्णा से मुक्त हो, पराई स्त्री को अपनी माँ की तरह समझे) जिव्हा धकी असत्य न बोले , पर धननव झाले हाथ रे । (जिसकी जिव्हा असत्य बोलने पर रूक जाए, जो दुसरों के धन को पाने की इच्छा न करे) मोह माया व्यापे न हि जने दृढ वैराग्य जेना मन मां रे । (जो मो माया में व्याप्तन हो, जिसके मन मे दृढ वैराग्य है) राम नाम शु ताली रे लागी, सकल तीरथतेना तनमांरे (जो हर क्षण मन में रामनाम का जाप करे, उसके शरीर मे सारे तीर्थ विद्यमान है) वणलोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निवसीरे (जिसने लोभ, कपट, काम, और क्रोध पर विजय प्राप्त कर लिया हो) 'भणे नरसैयो तेनु दर्शन करता कुल ऐकोजे र तार्या रे' (ऐसे वैष्णव के दर्शन मात्र से ही, परीवार की इकहत्तर पिढीयाँ तर जाती है उनकी रक्षा होती है)

यही अर्थ से महात्मा गांधीजीने अपना जीवन व्यतित कर संपूर्ण भारत वर्ष मे राष्ट्रीय एकात्मता के लीए महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।

राष्ट्रीयता और राष्ट्र के प्रति प्रेम भाव मनुष्य के स्वभाव में ही होती है । स्वतंत्रता के समय भारतवर्ष मै संगीत के माध्यम से ही जनमानस को राष्ट्रभाव से प्रेरित किया जाता है । भारतवर्ष में राष्ट्रप्रेम जागृत करने में संगीत कला का योगदान महत्वपूर्ण रहा है । एकात्मता के लिये कई गीतों की रचना की गई । 'राष्ट्रगान' से संपूर्ण भारतवर्ष में एकात्मता का भाव सरविभोर हो जाता है । वैष्णव जन तो यह भजन आध्यत्मिकता की ओर ले जाता है । संगीत कला का अंतिम सत्य अध्यात्मिकता ही है । इसिलीये यह कहना उचित होगा की संगीत एक कला ऐसी कला है जो मानव जाती को विभिन्न भाव भावनाओंको व्यक्त करने में सफल कला है । और इसके माध्यम से भारतवर्ष में विभिन्नता में एकता का संदेश हम अवश्य देते है । और इसी कारण जीवन बीना संगीत मतलब भर्तृहरी के अनुसार साहित्य संगीत कला विहीन: साक्षात पशु: पुच्छविषाणिहीन: अर्थात जो मनुष्य साहित्य और संगीत कला को नही जानते वे बिना सींग और पुंछ के साक्षात पशू के समान है ।

विज्ञान के संशोधन शिखरपर विराजमान भारतवर्ष आज राष्ट्रीय एकात्मता के लिए संपूर्ण विश्व में लोकप्रिय राष्ट्र माना जाता है । संस्कृतिकी प्राचीन परंपर जिस राष्ट्र के विकास मे अत्यंत महत्वपूर्ण है वही संस्कृतिकी धरोहर को कायम रखते हुऐ संगीत कला के विविध रूपों को अंगीकृत कर भारतवर्ष में राष्ट्रीयता का भाव और मजबुती से प्रचलित हो यही भारतवर्ष की राष्ट्रीय एकात्मता का अंतिम सत्य है ।

संदर्भग्रंथ :

१) भारतीय संगीत के नए आयाम - पं. विजयशंकर मिश्रा
२) स्मरण संगीत डॉ. सुधा पटवर्धन
३) आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका - नीलम बाला महेद्रु
४) भारतीय संगीत और वैश्वीकरण - डॉ. आकांक्षी
५) संगीत रत्नावली - अशोककुमार

❑❑❑

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad